International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
Vol. 4, Issue 3, March 2017 Impact Factor- 5.414
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
© Associated Asia Research Foundation (AARF) Publication
Website: www.aarf.asia Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

प्रगतिवाद और नागार्जुन

डॉ0 अरूणा चोपड़ा
आरोही मॉडल सीनियर
सैकेण्ड्री स्कूल, सिरसा

प्रस्तुत शोधपत्र, नागार्जुन के व्यक्तित्व और उनकी रचनाओं से सम्बन्धित है। नागार्जुन हिंदी प्रगतिवादी युग के महत्त्वपूर्ण कवि हैं। जनकवि नागार्जुन का हिंदी कविता में पदार्पण छायावाद के परवर्ती काल में हुआ। संस्कृत, हिंदी व मैथिली तीनों भाषाओं पर ज़बरदस्त अधिकार रखने वाले नागार्जुन को आधुनिक कविता के व्यंग्यकारों में सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त है। इन्हें आधुनिक युग का कबीर कहा जा सकता है। इन्होंने अपनी लेखनी को एक सशक्त हथियार के रूप में प्रयोग किया। भारत में तत्कालीन सामाजिक व राजनीतिक ढांचे को देखकर कभी क्रोधित होकर, कभी क्रांतिकारी बनकर, कभी हल्के–फुल्के ढंग से, कभी शरारती मिजाज़ अपनाकर अपनी लेखनी के माध्यम से व्यंग्य किया। सामाजिक परिस्थितियों पर व्यंग्य व सामान्य जन की पीड़ा को साहित्य में स्थान देने की परम्परा जो भारतेंदु युग के बाद रूकी हुई सी जान पड़ती थी, वह परम्परा प्रगतिवादी युग में आकर नागार्जुन व अन्य कवियों जैसे केदारनाथ अग्रवाल, त्रिलोचन आदि के प्रयासों से पुनः प्रारंभ हुई। आधुनिक युग में नागार्जुन ने अपने साहित्य में यर्थाथवाद को पराकाष्ठा तक पहुँचा दिया। इन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से न केवल प्रगतिवाद को समृद्ध किया बल्कि हिंदी साहित्य को भी चरमोत्कर्ष पर पहुँचा दिया। इसलिए कहा जा सकता है कि जनवादी कविता व प्रगतिशील कविता की परंपरा को समृद्ध करने का श्रेय नागार्जुन कवि को जाता है।

प्रगतिवाद का सामान्य अर्थ है– आगे बढ़ने व विकास करने का सिद्धांत। साहित्य अपनी परंपरागत रूढ़ियों एवम् विश्वासों को त्यागकर समय के साथ परिवर्तित होकर जब नई चेतना का संचार करता है तो उसे प्रगतिशील साहित्य कहा जाता है। परन्तु हिंदी साहित्य में मार्क्सवादी सिद्धांतों के आधार पर लिखी गई रचनाओं को प्रगतिवादी रचनाओं के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त हुई। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री कार्लमार्क्स द्वारा प्रतिपादित द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की साहित्यिक अभिव्यक्ति को ही प्रगतिवाद का नाम दिया गया। कार्ल–मार्क्स के अनुसार प्रारंभ से ही समाज के दो वर्ग प्रमुख रहे हैं। पहला वर्ग है– शोषक वर्ग जिसमें पूँजीपति व शासक आते हैं तथा दूसरा वर्ग है शोषित वर्ग जिसके अंतर्गत किसान, मजदूर व गरीब व्यक्ति आदि आते हैं। इन दोनों वर्गों में संघर्ष चलता रहता है। कार्ल–मार्क्स के इन्हीं विचारों से प्रेरणा पाकर जे0एम0 फोस्टर ने सन् 1935 ई0 में पेरिस में 'प्रोग्रैसिव राइटर्स एसोसिएशन' की स्थापना की तथा इसी से प्रेरित होकर 1936 ई0 में 'प्रगतिशील लेखक संघ' की स्थापना की गई जिसका पहला अधिवेशन 1936 ई0 में महान् साहित्यकार मुंशी प्रेमचंद जी की अध्यक्षता में हुआ। शिवदान सिंह चौहान के लेख 'भारत में प्रगतिशील साहित्य की आवश्यकता' में प्रगतिशील साहित्य को मार्क्सवादी साहित्य से प्रभावित होने की चर्चा की गई जो कि 'विशाल भारत' (मार्च 1937) में प्रकाशित हुआ। वस्तुतः प्रगतिवाद छायावाद के उपरान्त 1936 ई0 के आस–पास शोषण के विरूद्ध आवाज उठाने व शोषितों में नई चेतना का संचार करने के लिए हुआ।

राम विलास शर्मा के अनुसार

'प्रगतिवाद के तीन कवि जैसे ढाक के तीन पात नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, त्रिलोचन शास्त्री। त्रिलोचन शास्त्री कृपांक श्रेणी के कवि हैं। असली प्रगतिवादी दो ही हैं– नागार्जुन और केदारनाथ अग्रवाल।''

कविवर नागार्जुन हिंदी प्रगतिशील साहित्य के तीन स्तंभों में से एक माने जाते हैं। महान साहित्यकार नागार्जुन का वास्तविक नाम वैद्यनाथ मिश्र था। इन्होंने अपनी कविताओं में मिथिला के गाँव के लोगों से लेकर दिल्ली तक के जन सामान्य की पीड़ा को अपने साहित्य में स्थान दिया। इनका साहित्य सागर की सी विशालता अपने में समेटे हुए हैं। इन्होंने सत्ताधारी लोगों जिन्होंने दोहरा व्यक्तित्त्व धारण किया हुआ है तथा जो रामराज के नाम पर

जनता के साथ धोखेबाजी व पक्षपात कर रहे थे, उनका भी पुरजोर विरोध किया है। राजनीतिक रूप से मार्क्सवादी विचारधारा के समर्थक होने के नाते समाज में साम्यवाद लाने का स्वप्न देखते रहे। राजनेताओं के रवैये से अंसतुष्ट होकर एक स्थान पर वे कह उठते हैं–

''बेच–बेच कर गांधी का नाम
बटोरी वोट
बैंक बैलेंस बढ़ाओ
राजघाट पर बापू की वेदी के आगे अश्रु बहाओ।''

नागार्जुन की दृष्टि लोकहित व जनता के प्रति उचित व्यवहार पर ही टिकी हुई थी। हालांकि नागार्जन से पहले भी कई कवियों ने जनता की पीड़ा व दुर्दशा का मार्मिक चित्रण किया, किंतु जिस गहराई व यथार्थपरक दृष्टि से नागार्जुन जी ने किया वैसा किसी कवि ने शायद ही किया हो। इनके व्यक्तित्त्व की एक ओर मुख्य विशेषता है कि कठिन व विपरीत परिस्थितियों में धैर्य रखना तथा झूठ व अन्याय के सामने न झुकना। इसलिए स्वतंत्रता के पश्चात् भी जब जनता के हितों को नकारा गया व उनकी मूलभूत आवश्यकताओं को भी अनदेखा किया गया तो वे अपनी लेखनी के माध्यम से कह उठते हैं–

''कई दिनों तक चूल्हा रोया चक्की रही उदास।
कई दिनों तक कानी कुत्तिया सोई उनके पास।
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त।
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त।''

जैसा कि पहले भी उल्लेख किया गया है कि यथार्थवाद को इन्होंने पराकाष्ठा तक पहुंचा दिया है। 'हरिजन गाथा' व 'तालाब' की मछलियां इसका ज्वलंत उदाहरण है। समाज में नारी की भी सदैव उपेक्षा की गई है। उसे एक वस्तु मात्र समझ कर उसके साथ दुर्व्यवहार किया गया है। जनकवि नागार्जुन ने स्त्रियों की दुर्दशा, उसे गुलाम समझने की मानसिकता, सदियों से उस पर जुल्म करने वालों व उन्हें कमज़ोर समझने वाले लोगों पर भी करारा व्यंग्य किया है। 'तालाब की मछलियाँ' नामक कविता में स्त्री–जीवन की रूपरेखा स्पष्ट करते हुए वे कहते हैं–

''उथल पुथल है जन–जीवन में
सभी ओर उत्क्रांति हो रही,
टूट रहे हैं अन्तःपुर के ढांचे
आज या कि कल
तुम भी तो निकलोगी बाहर
हवेलियों से, डेवढ़ियों से
फिर जनपद के खंडनरक ये मिट जाएंगे
शब्दकोष को छोड़ कहीं भी
नहीं 'असूर्यम्पश्या' का अस्तित्व रहेगा
'औरतवादी' रह न जाएगी।''

कवि नागार्जुन ने प्रकृति के विविधि रूपों का वर्णन किया है। प्रकृति के प्रति इनके लगाव ने ही इन्हें प्रकृति के साधारण व असाधारण रूपों का वर्णन करने के लिए विवश किया। प्रकृति इनके काव्य में पूरी विशालता व विविधता अपने में समेटे हुए परिलक्षित होती है। प्रकृति के प्रति अगाध श्रद्धा व प्रेम उनकी कविता 'बादल को घिरते देखा है' में परिलक्षित होती है।

''अमल धवलगिरि के शिखरों पर
बदल को घिरते देखा है।
छोटे–छोटे मोती जैसे
उसके शीतल तुहिन कणों को
मानसरोवर के उन स्वर्णिम
कमलों पर गिरते देखा है,
बादल को घिरते देखा है।''

नागार्जुन जी ने अपनी कविताओं में प्रकृति के जिन रूपों का वर्णन किया है, उसमें भी इनकी अद्‌भुत प्रतिभा परिलक्षित होती है। इनका प्रकृति–वर्णन छायावादी कवियों की भाँति कल्पनाशीलता पर आधारित न होकर यथार्थ के धरातल पर वर्णित है। इस प्रकार नागार्जुन जी का प्रगतिवादी दृष्टिकोण प्रकृतिपरक रचनाओं में भी पूर्ण रूप से व्याप्त है।

''फसल क्या है?
और तो कुछ नहीं है वह
नदियों के पानी का जादू है वह
हाथों के स्पर्श की महिमा है
भूरी–काली–संदली मिट्टी का गुण–धर्म है
रूपातंरण है सूरज की किरणों का
सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का।''

कविवर नागार्जुन जी की कविताएं कथ्य और शिल्प दोनों ही दृष्टियों से सर्वोत्तम कविताओं की कसौटी पर खरी उतरती है। इनके विषय में नामवर सिंह लिखते हैं कि कविता के रूप सम्बन्धी जितने प्रयोग अकेले नागार्जुन ने किए हैं, उतने शायद ही किसी ने किए हो। कविता की उठान तो कोई नागार्जुन से सीखे और नाटकीयता में तो वे लाज़वाब ही हैं, जैसी सिद्धि छंदों में, वैसा ही अधिकार बेछंद या मुक्त छंद की कविता पर। उनके बात करने के हजार ढंग हैं।

''हम काहिल हैं, हम भिखमंगे, तुम हो औढरदानी
अब की पता चलता है प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी।''

अंतः हम कह सकते हैं कि जनवादी कवि नागार्जुन आधुनिक हिंदी कविता के सर्वश्रेष्ठ व्यंग्यकार हैं। हिंदी साहित्य में यथार्थवाद की परंपरा को समृद्ध करने का श्रेय इन्हीं को प्राप्त है। हिंदी साहित्य में इनका नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित है।

संदर्भ

1. पांडेय, मैनेजर : नागार्जुन चयनित कविताएं
2. नागार्जुन रचनावली : राजकमल प्रकाशन, प्राईवेट लिमिटेड
3. https://m.facebook.com>www.ugcnet.hidi
4. https://hi.m.wikipedia.org>wiki>हिंदी_साहित्य_में_प्रगतिवाद